मेरा लाल गुब्बारा

ईव बन्टिंग

हिंदी: इंदुजी

मेरा
लाल गुब्बारा
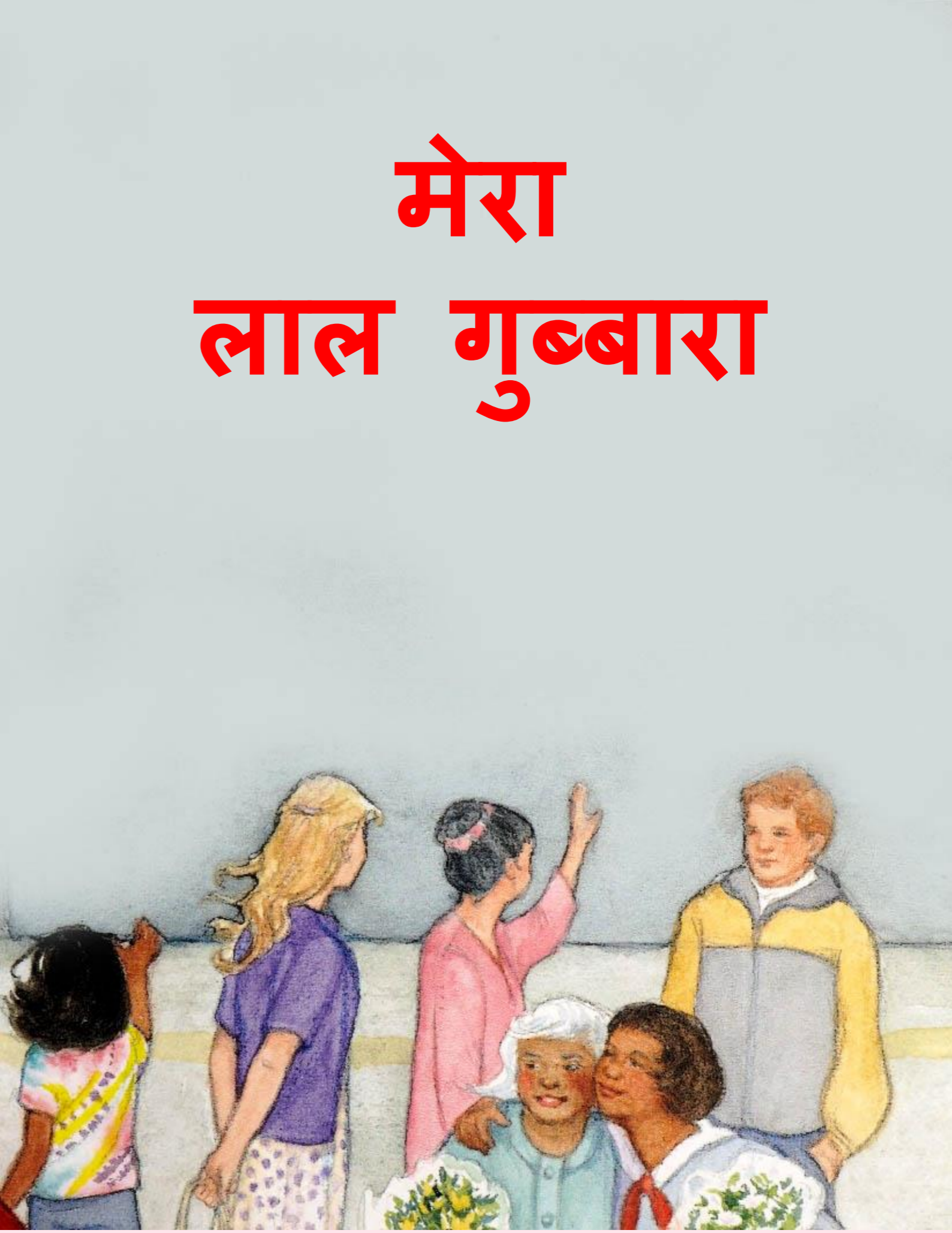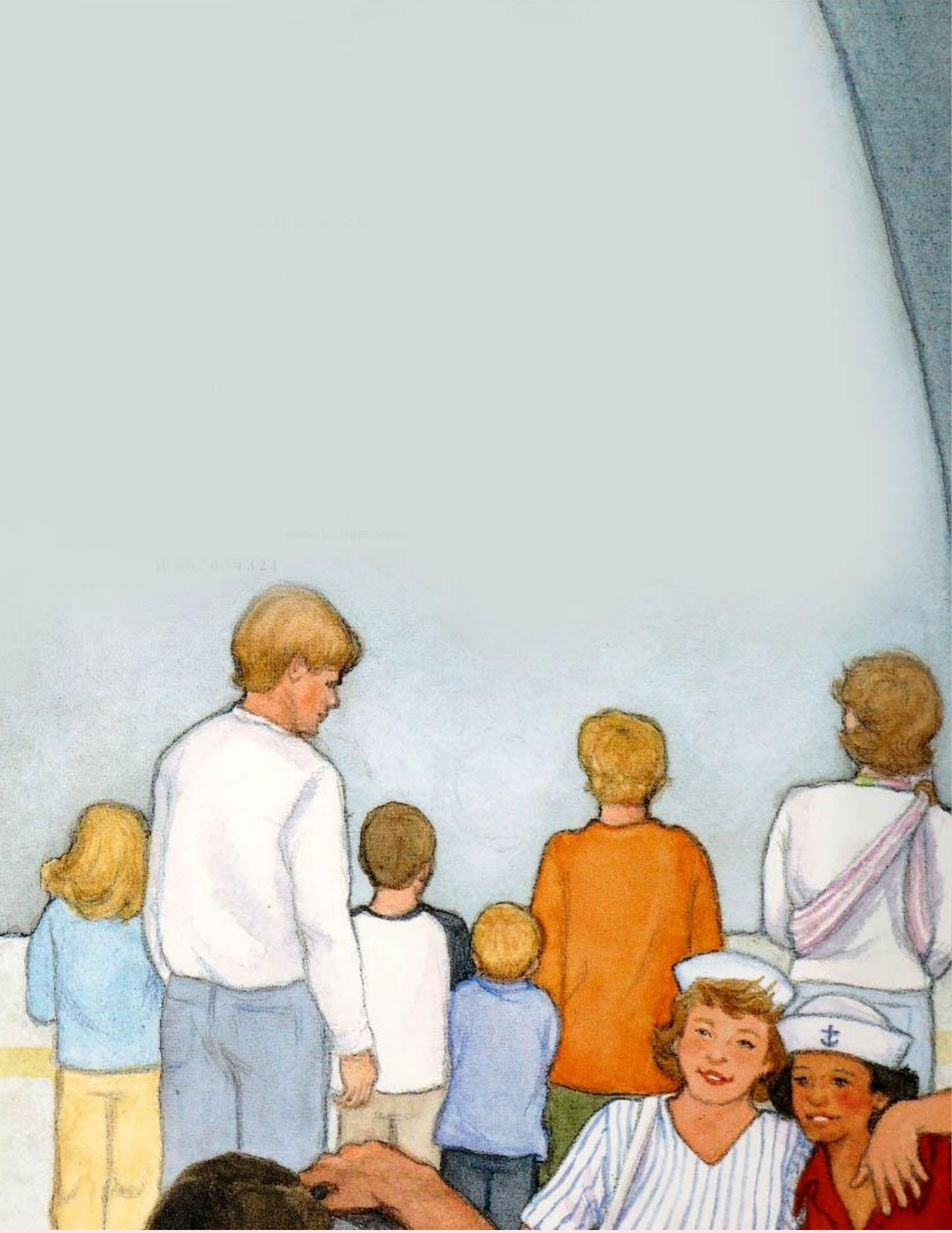
माँ ने जब मुझे नींद से जगाया तब जो पहली चीज़ मैंने देखी वह है मेरा लाल गुब्बारा जो दिल के आकार का है. इस गुब्बारे पर छपा है

सुस्वागतम.

वह प्रतीक्षा कर रहा है.

माँ और मैं भी प्रतीक्षा कर रहे हैं.

लेकिन आज हमारी प्रतीक्षा समाप्त होने वाली है.

मैं कूद कर बिस्तर से बाहर आ जाता हूँ.

अपना लाल गुब्बारा मैं अपने साथ नीचे ले आया हूँ. मैंने उसका धागा कुर्सी की बाज़ू के साथ लपेट दिया है. गुब्बारा मेज़ के ऊपर हवा में उड़ रहा है.

सुस्वागतम.

माँ ने सुंदर कपड़े पहन रखे हैं. मैंने भी. मेरा तो जांघिया भी नया है.

माँ ने नाश्ता परोसा. लेकिन हम अधिक न खा पाते हैं.

“क्या पापा घर लौटने पर प्रसन्न होंगे?” मैं माँ से पूछता हूँ.

“बहुत प्रसन्न.”

“लेकिन उन्हें अपना कर्तव्य करना था,” मैं कहता हूँ, “अपने युद्ध पोत पर. उन्हें यह सुनिश्चित करना था कि हमारा देश सुरक्षित रहे.” मैं यह बात जानता हूँ क्योंकि मैंने कई बार यह बात माँ से पूछी थी.

“यह सही है, बॉबी,” मेरे जूते बांधने के लिए माँ नीचे बैठ गई.

मेरा लाल गुब्बारा हमारे साथ कार के अंदर नहीं जाना चाहता है. हमने उसे धीरे से अंदर धकेला है. वह उड़ कर छत के पास आ गया है. उसका धागा मेरी कलाई के साथ बंधा है.

जिस घाट पर विशाल युद्ध पोत आने वाला है वहाँ तक पहुँचने वाले रास्ते पर बहुत भीड़ है. कारें खड़ी करने वाली जगह भी भरी हुई है.

"बहुत सारे माता-पिता आज घर लौट रहे हैं," माँ ने प्रसन्नता से कहा.

सच में बहुत लोग आए हैं और उन में धक्का-मुक्की भी हो रही है. यहाँ बड़े लोग हैं, छोटे लोग हैं, बच्चा-गाड़ियों में बच्चे भी हैं, कुछ नन्हें बच्चों को माताओं ने अपने कंधों से चिपका रखा है. एक बैंड ज़ोर-ज़ोर से कोई धुन बजा रहा है.
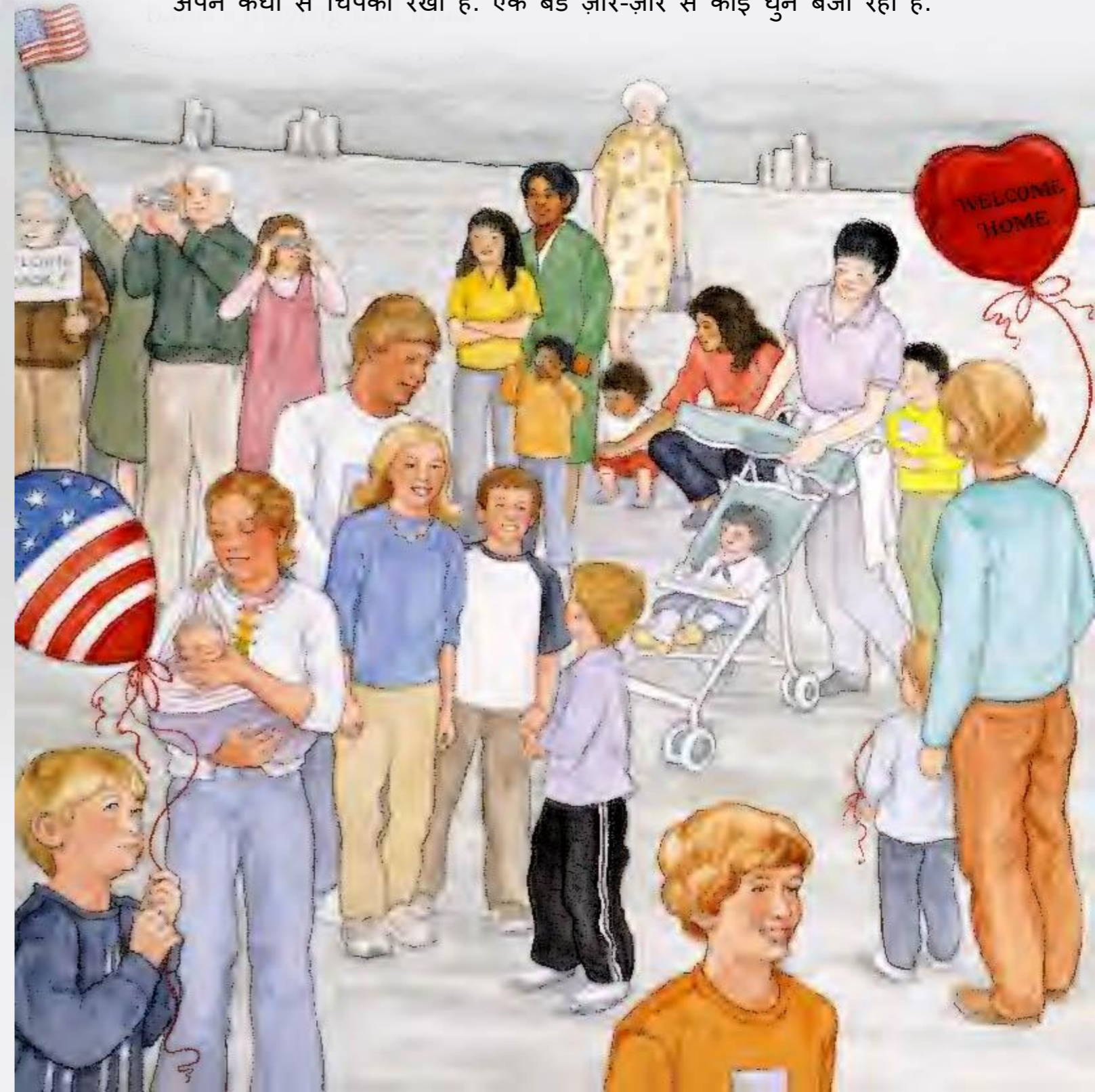
"क्या तुम्हें दिखाई दे रहा है?" एक आदमी ने बहुत लंबे व्यक्ति से पूछा.

"अभी नहीं," लंबे आदमी ने उत्तर दिया.

"क्या तुम्हारा बेटा घर लौट रहा है?" उसी आदमी ने पूछा.

"मेरी बेटी." दूसरे ने खुशी से मुस्कराते हुए कहा.

"मेरे पापा आ रहे हैं," मैंने उस आदमी को बताया. मैंने ऊपर अपने गुब्बारे की ओर देखा और उसके धागे को झटका दिया. गुब्बारा नीचे झुक गया. फिर वह ऊपर उड़ने लगा, सबसे ऊपर, लंबे आदमी से भी ऊपर. मेरे पिता अकसर मुझे अपने कंधों पर उठा लेते हैं. अगर मैं इस समय उनके कंधों पर बैठा होता तो मेरा लाल गुब्बारा बादलों को छू लेता.

मैं माँ की दूसरी ओर आ जाता हूँ, ताकि वह मेरे गुब्बारे को छू न सके.

मेरा लाल गुब्बारा मेरे लिए बड़ा महत्वपूर्ण है. माँ ने पिता को पत्र लिख कर बता दिया था कि मेरे हाथ में एक लाल गुब्बारा होगा. मैंने धागे को तेज़ी से हिलाया और गुब्बारा हवा में इधर-उधर डोलने लगा.
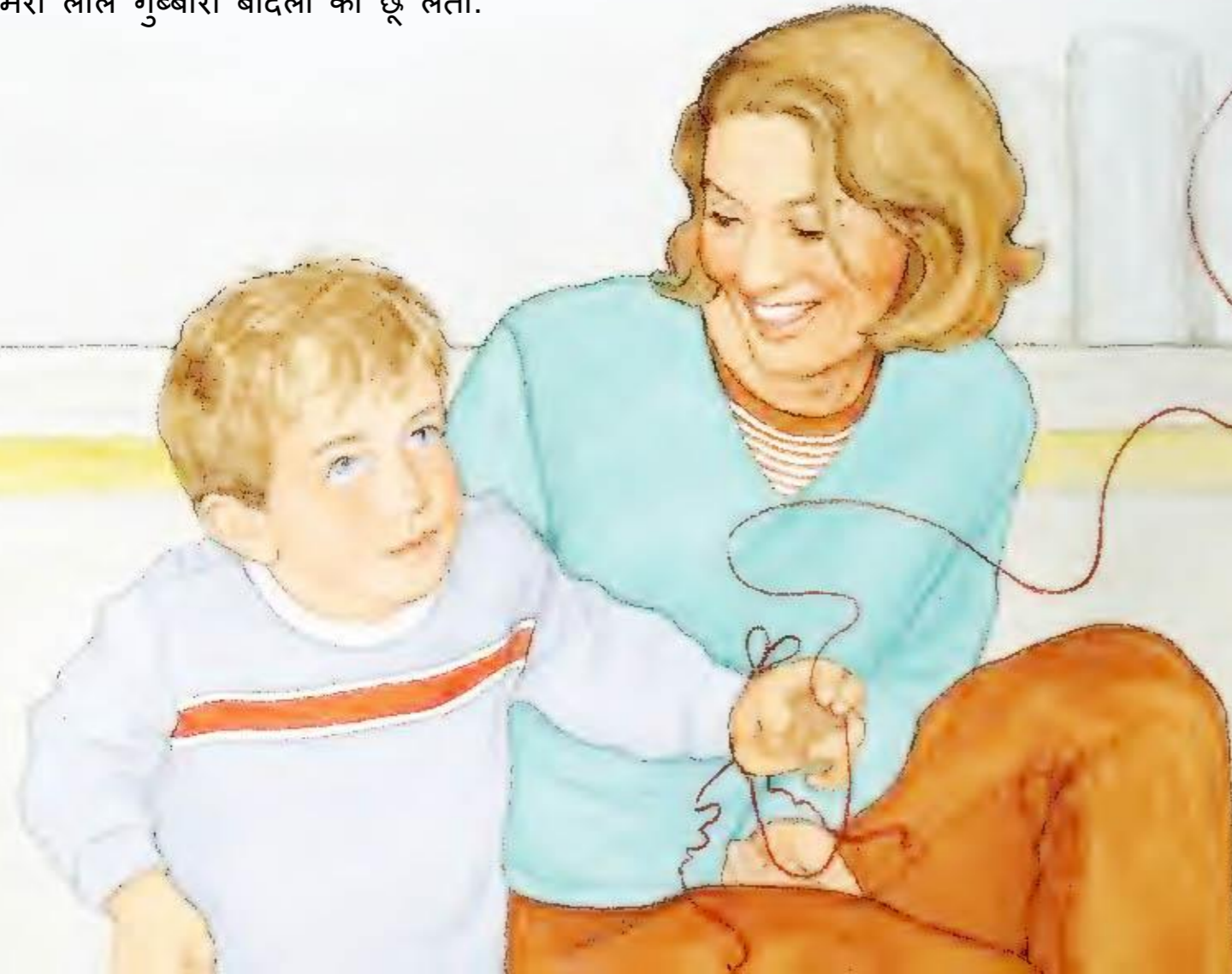
मेरे पास खड़ी एक लड़की मेरे गुब्बारा के धागे को पकड़ना चाहती है. लेकिन मैंने उससे कहा, "छूओ मत, यह गुब्बारा मेरे पापा के लिए है."

वह लड़की मुझ से बड़ी है.
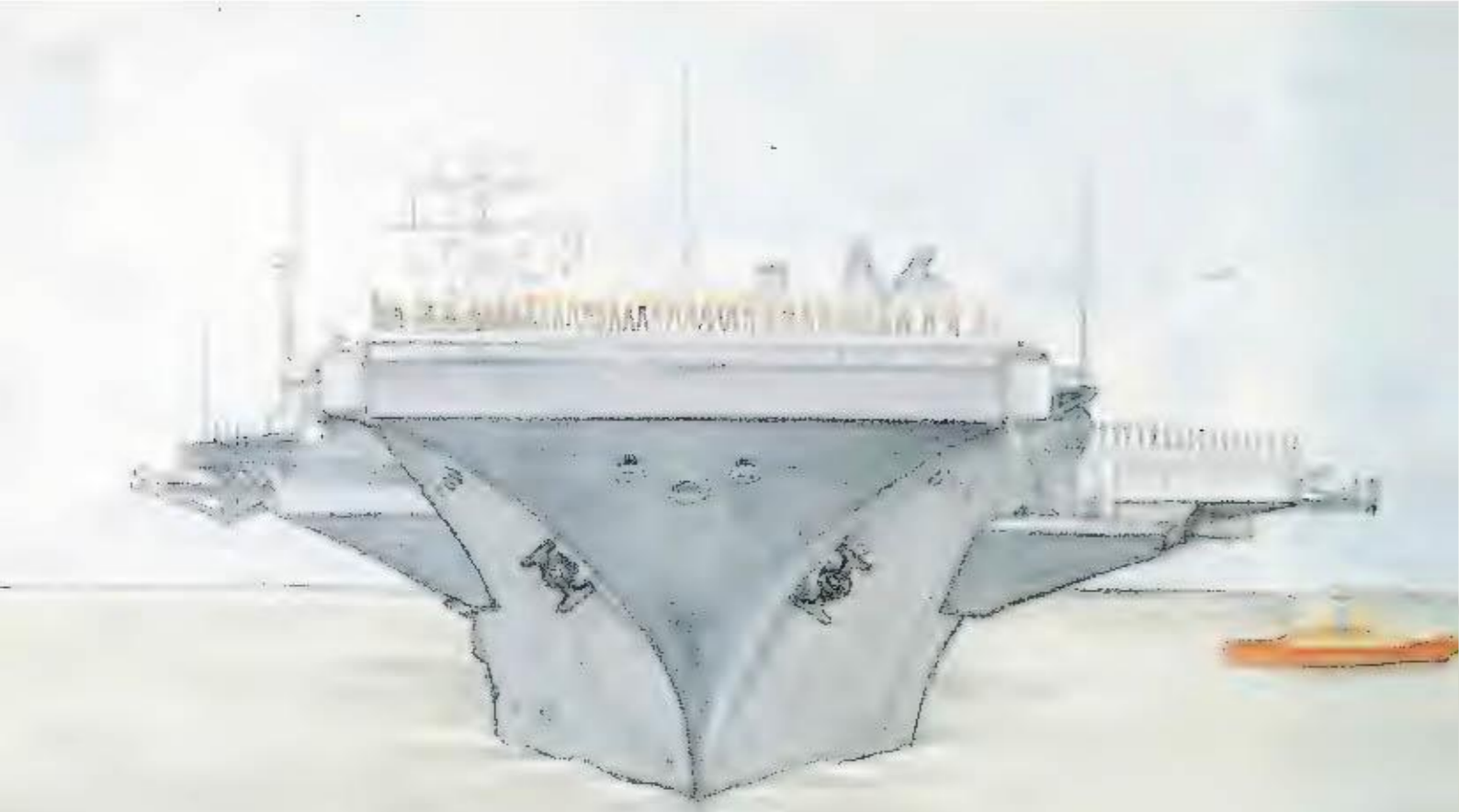
अचानक तालियों की आवाज़ सुनाई दी.

“वह आ रहा है!” एक आदमी ने ऊँची आवाज़ में कहा.

मैं भी तालियाँ बजाने लगा. तालियों की आवाज़ इतनी ऊँची है कि लगा मेरे कान फट जायेंगे.

एक विशाल जहाज़ आ रहा है. उसका डैक सपाट है जहाँ से हवाई जहाज़ उड़ान भर सकते हैं और नीचे उतर भी सकते हैं. उस पर खड़े हवाई जहाज़ और रेलिंग के साथ खड़े नाविक मुझे दिखाई दे रहे हैं. सब छोटे आकार के लग रहे हैं.

बैंड और अधिक ऊँची आवाज़ में एक धुन बजा रहा है. मैं वह गीत जानता हूँ. यह गीत मेरे पापा का है, 'लंगर उठ गए'. वैसे यह गीत उस जहाज़ के बारे में है जो यात्रा पर जा रहा है, पर तब भी ठीक है.

हम सब भी गा रहे हैं और तालियाँ बजा रहे हैं. एक महिला जो मेरी दादी जैसी दिखती हैं, फूलों के एक बड़े गुच्छे से फूल निकाल कर सब को दे रही हैं. लेकिन वह हम से बहुत दूर हैं. मुझे लगता है कि हमें फूल नहीं मिलेगा.

हर ओर बैनर दिखाई दे रहे हैं. एक बैनर पर लिखा है, 'हम प्रसन्न हैं कि आप लौट रहे हैं." दूसरे पर लिखा है, 'हमने आपको बहुत याद किया.' वहाँ कई गुब्बारे भी हैं. लेकिन मेरे गुब्बारे जैसा एक भी नहीं है.

मैंने माँ के बाजू को खींचा, "आपको विश्वास है कि आपने पापा को बताया था कि मेरा गुब्बारा लाल रंग का है और वह दिल के आकार का है?"

वह मुझे देख कर मुस्कराई. "हाँ, मैंने बताया था." उसने धागे को कस कर मेरी कलाई से बांध दिया.
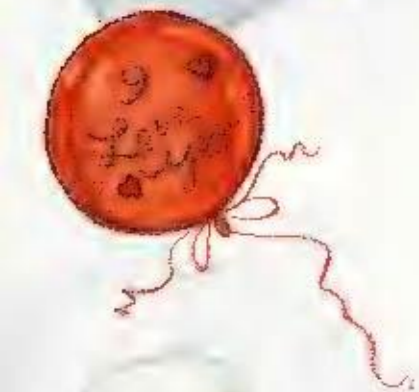
“फियू!” मेरे मुँह से निकला. जिस दिन माँ ने मुझे बताया था कि पापा के घर लौटने का समय आ गया है, तब से मैं चिंतित हूँ. अगर इस बार वह मुझे पहचान न पाये तो? मुझे लगता है मैं बड़ा हो गया हूँ. लेकिन मेरे पास दिल के आकार का लाल रंग का गुब्बारा है और इसलिए मुझे ढूँढना सरल होगा.

जहाज़ धीरे-धीरे घाट की ओर आगे बढ़ रहा है. इसका डैक इतना ऊँचा है कि जहाज़ एक ऊँची इमारत जैसा लग रहा है. नीचे से देखते हुए मैं पहचान नहीं पा रहा कि मेरे पापा कौन हैं. यहाँ से सब नाविक एक जैसे दिखाई दे रहे हैं.

मेरे चारों ओर लोग एक दूसरे को गले लगा रहे हैं, चूम रहे हैं. मैं आशा करता हूँ कि माँ के अतिरिक्त कोई मुझे गले न लगाये.

माँ ने धागा बहुत कस कर बांधा है. वह मेरी कलाई में चुभ रहा है.

धागे को ढीला करने के लिए मैंने अपनी उंगली से धागे को खींचा. लेकिन गांठ खुल गई. धागा मेरे हाथ से फिसल गया. इसके पहले कि मैं समझ पाता कि क्या हुआ था, गुब्बारा ऊपर उड़ गया.

मैं देखता रहा और गुब्बारा ऊपर और ऊपर उड़ता गया. मैंने चिल्लाने की कोशिश की पर चिल्ला न पाया.

“माँ!” मैं किकियाया. “मेरा गुब्बारा!”

मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा है.
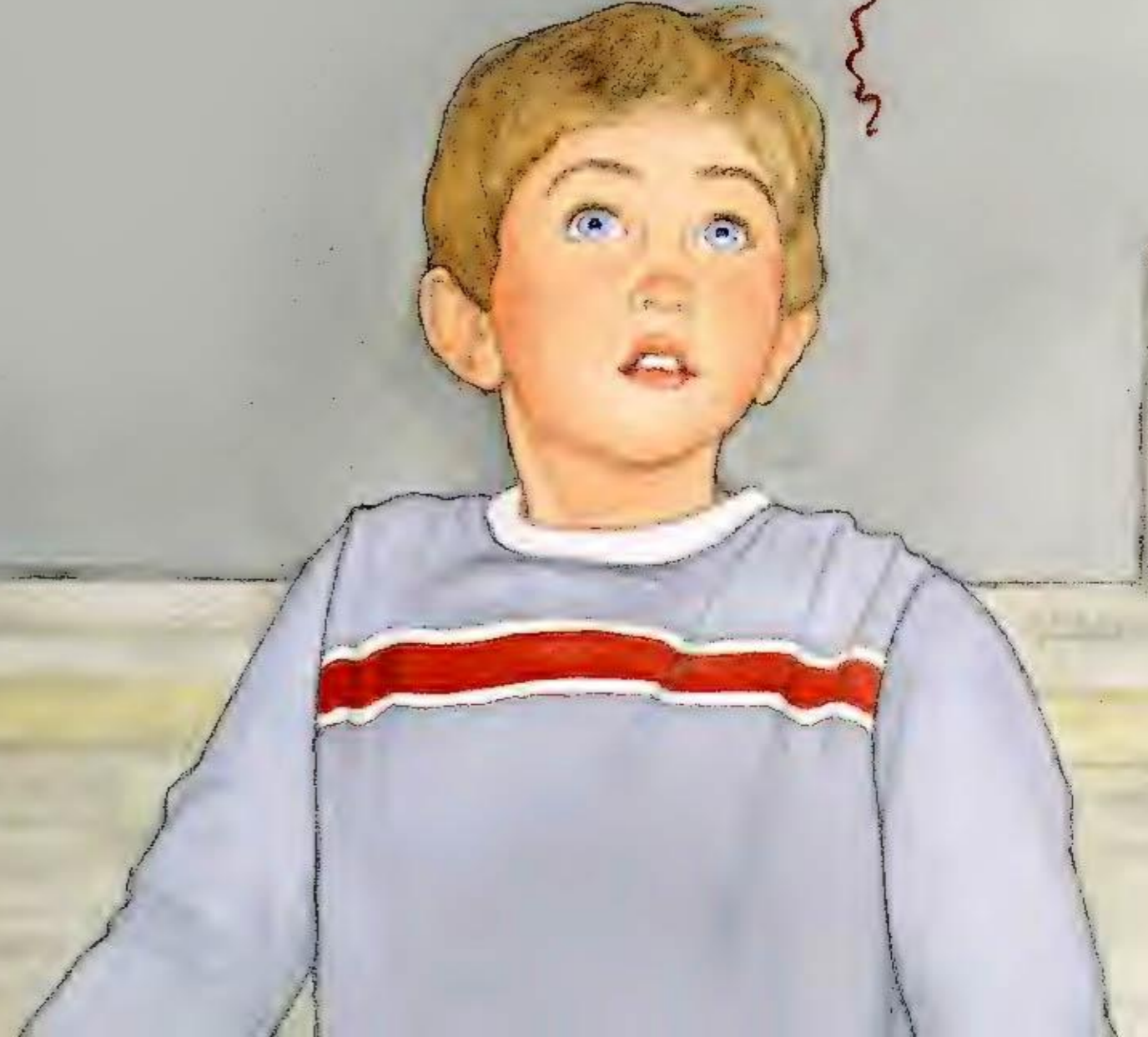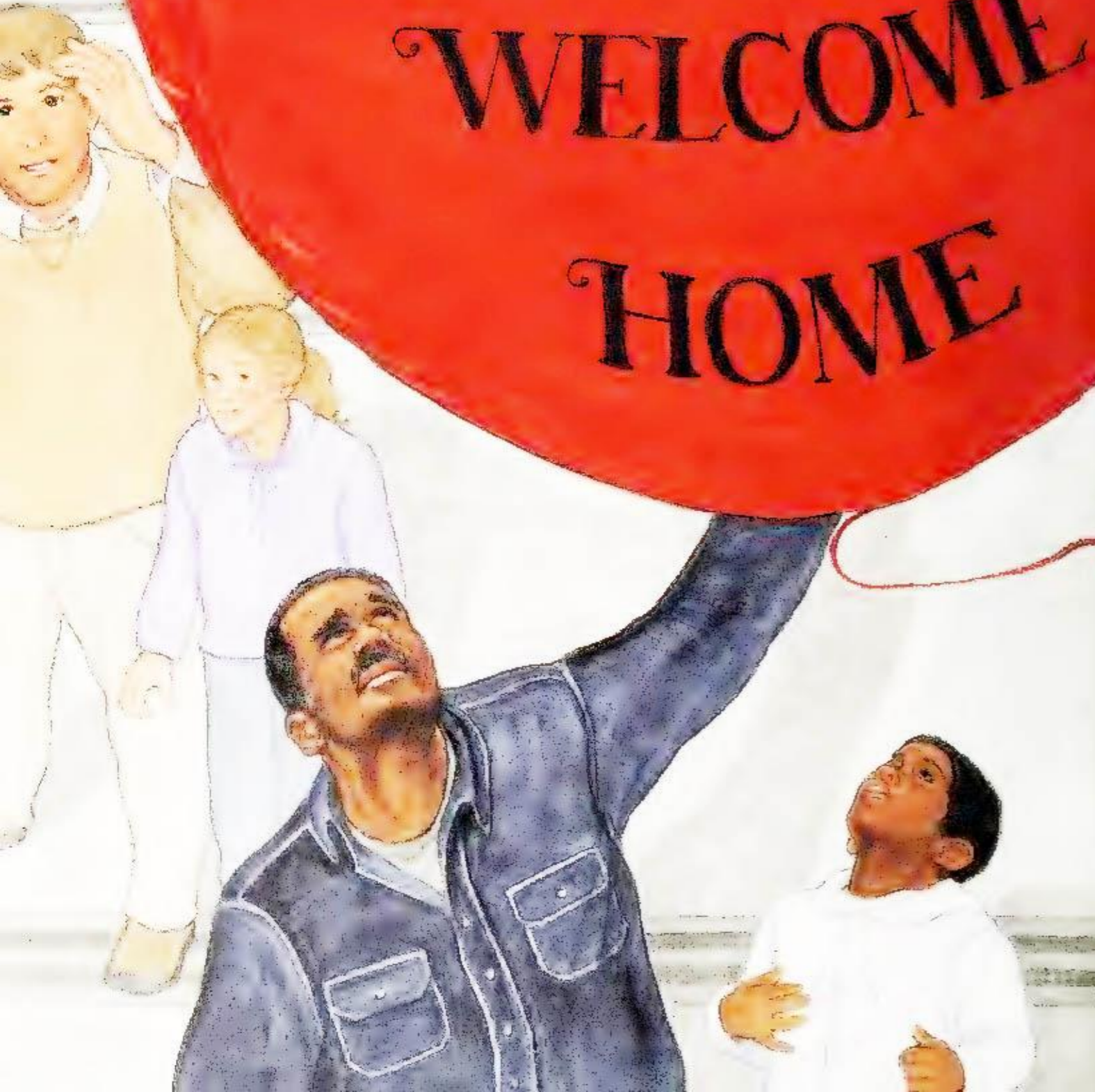
माँ ने ऊपर दिखा. “ओह, नहीं,” उसने कहा. धागे को पकड़ने के लिए वह कूदी लेकिन गुब्बारा बहुत ऊपर हो गया है.

सबसे लंबे आदमी ने गुब्बारा देखा. वह भी कूदा, वह दुबारा कूदा. फिर उसने निराशा से कहा, “मुझे अफसोस है बच्चे, गुब्बारा बहुत ऊपर चला गया है.”

हम वहीं खड़े हैं, आँखों को धूप से बचाने के लिए हमने हाथ से छाया कर रखी है. दिल के आकार वाले मेरे लाल गुब्बारे को हम देख रहे हैं जो ऊपर उड़ता जा रहा है. उसका पतला, लंबा धागा उसके नीचे झूल रहा है.

मेरी आँखें भर आई हैं.

माँ नीचे मेरे पास बैठ जाती है और अचानक मैं रोने लगता हूँ.

“पापा मुझे पहचान नहीं पायेंगे,” मैंने फुसफुसाकर कहा. माँ ने कहा, “ऐसा क्यों कह रहे हो? वह हमेशा तुम्हें पहचानते.........”

“तभी एक औरत चिल्लाई, “छोटे लड़के! छोटे लड़के! देखो! अपने गुब्बारे को देखो.”
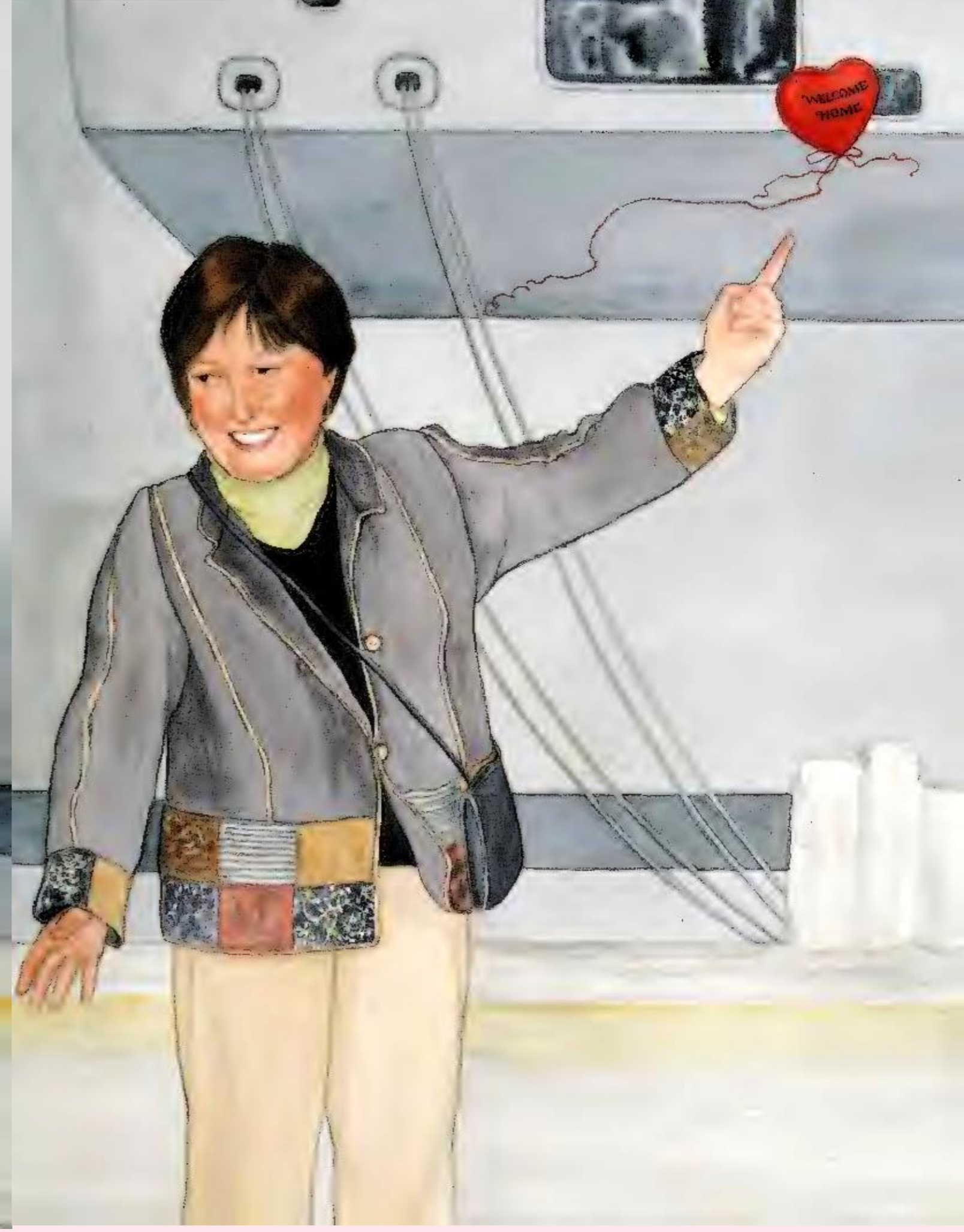
मैंने सिर उठा कर देखा. मेरा लाल गुब्बारा जिसका आकार दिल जैसा है उड़ कर जहाज़ के पास आ गया है. और जहाज़ पर खड़े नाविकों के ऊपर हवा में उड़ रहा है.

“देखा?” माँ ने कहा.

मैंने सिसकियां लेना बंद कर दिया.

और तब मुझे पापा दिखाई दिए. वह कतार में चौथे नंबर पर हैं.

“पापा! पापा!” मैंने ज़ोर से पुकारा.

अब सब नाविक जल्दी-जल्दी जहाज़ से नीचे आ रहे हैं और भीड़ में प्रतीक्षा कर रहे लोगों से मिल रहे हैं. मेरे पापा भी हमारे पास पहुँच गए हैं. वह माँ को प्यार कर रहे हैं. उन्होंने मुझे गोद में उठा लिया है. उन्होंने मुझे कस कर पकड़ रखा है. वह लंबे हैं, बहुत लंबे, सबसे लंबे.

“आपने मेरा दिल के आकार वाला लाल गुब्बारा देखा?” मैंने पूछा.

“हाँ,” उन्होंने कहा. “मैं जानता था कि वह तुम्हारा है. फिर मैंने नीचे देखा और मैंने तुम्हें पहचान लिया.”

उन्होंने मुझे कस कर गले लगाया. मैंने उनके कान में धीरे से कहा,

“सुस्वागतम, पापा.”

सुस्वागतम
WELCOME
HOME